''अशफाक उल्ला खॉ''–एक राष्ट्रीय क्रांतिकारी

डॉ0 ऊषा देवी,

प्रवक्ता– इतिहास,
विद्यांत हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोध सारांश

हमारे देश की स्वतंत्रता के लिए अनेक सेनानियों ने अपने त्याग, अपनी लगन और साधना के द्वारा जो सेवा की वह इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर चमकती रहेगी। कई लोग फाँसी के फन्दों पर झूले, कई लोगों ने कठोर कारावास की पीड़ा झेली, कई लोगों ने अपने जीवन के अमूल्य वर्ष स्वतंत्रता के लिए लड़ते–लड़ते न्यौछावर कर दिए। माताओं ने अपनी ममता समर्पित की, बहनों ने हँसते–हँसते अपने भाइयों को विदा किया, न युवा पीछे रहे, न वृद्व पीछे रहे और न ही महिलाएं पीछे रहीं। सभी के मन में जोश था, सभी क्रान्ति के लिए लालायित थे। स्वतंत्रता हमें भारत माँ के उन वीन पुत्रों के द्वारा प्राप्त हुई है जिन्होंनं देशभक्ति के मार्ग पर चलते हुए लाठियों की चोटें सहन की है, जिन्होंने कारागार कीं कोठरियों में हृदय कम्पक यातनाएं सहीं हैं जिन्होंने हँसते–हँसते फाँसी के तख्तों पर अपने प्राणों का विसर्जन किया है।

क्रांतिकारी सेनाानियों में अशफाक उल्ला खाँ के त्याग बलिदान तथा हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रयत्नों को इस पत्र में रेखांकित किया गया है। वे जाति, धर्म और सम्प्रदाय से दूर देश के हित के लिए ही कार्य करते रहे, वे मंदिर, मस्जिद गुरूद्वारा और गिरिजाघर को महत्व न देकर देश की स्वतंत्रता को ही महत्व देते रहे। वे जाति के मुसलमान थे, इस्लाम उनका धर्म था, पर उन्होंने अपने जीवन में मुसलमानियत और इस्लाम को कभी महत्व नहीं दिया, उन्होंने सदा महत्व दिया देश को, देश की स्वतंत्रता को। अशफ़ाक सच्चे मुसलमान थे, वे हिन्दू और मुसलमान में भेद नही मानते थे वे कहा करते थे कि हिन्दुस्तान की जमीन पर पैदा हुआ हूँ, हिन्दुस्तान ही मेरा घर है, हिन्दुस्तान ही मेरा कर्म, मेरा ईमान है,, मैं हिन्दुस्तान के लिए मर मिटूँगा, मैं हिन्दुस्तान की मिट्टी में मिलकर गर्व का अनुभव करूँगा। स्वतंत्रता संग्राम के वह एक प्रमुख क्रांतिकारी थे उन्होंने काकोरी कांड में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश सरकार ने उन पर अभियोग चलाया और देश के प्रति समर्पण की सजा के रूप में उन्हें 19 दिसम्बर 1927 को फांसी दी गई। वे बिस्मिल की भाति एक बेहतरीन शायर और साहित्यकार भी थे इनका पूरा नाम अशफाक उल्ला खाँ हसरत वारसी था।

कूट शब्द– *उत्तर प्रदेश, काकोरी शाहजहाँपुर ,स्वाधीनता, क्रांतिकारी, राष्ट्रीयता, त्याग–बलिदान, एकता अखंडता, ।*

अशफाक उल्ला खॉ का जन्म उत्तर प्रदेश के शहीदगढ़, शाहजहांपुर में वर्तमान रेलवे स्टेशन के करीब कदनखैल, जलालनगर मोहल्ले में मोहम्मद शफीकुल्लाह खाँ के घर में 22 अक्टूबर 1900 ई0 को हुआ था। आपके पूर्वज मुस्लिम पठान थे जो अफगानिस्तान से कुछ साल पहले यहां आकर

बसे थे। उन्हें शाहजहाँपुर के सिपहसलार बहादुर खाँ ने कॉ–ओ–गोला के बीच रूहेलों की मारकाट का मुकाबला करके मुगल साम्राज्य की रक्षा के लिए इस शहर में बसाया था। अशफाक की माँ मजहूरून्निासाँ बेगम खलील उपजाति की पठान थी, उनके पूर्वज काबुल से आकर सात पुस्त पहले ही बस गये थे। इसी कारण इस मोहल्ले का नाम खलील गर्बी पड़ा। अशफाक के ननिहाल में सभी लोग पढ़े लिखे थे। अशफाक ने अपनी ननिहाल के हालात 'बकलमखुद' में इस प्रकार बयान किया है– मेरी माँ के दादा और उनके भाई पहले वाले सब जज थे और दूसरे वाले डिप्टी कलेक्टर थे। जब 1857 का गदर शुरू हुआ तो उन्होंने मुल्क का साथ न दिया और उनकी कोठी को आग लगा दी गई।

डॉ0 एन0सी0 मेहरोत्रा ने अपनी पुस्तक 'शाहजहाँपुर ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर' के पृष्ठ–63 पर लिखा है, शाहजहाँपुर के कुछ लोग क्रांतिकारी गतिविधियों की सूचना कम्पनी सरकार को देते थे। मधुर संबंध न होने के कारण (तत्कालीन नवाब) गुलाम कादिर अली खाँ। (अशफाक के परनाना) हामिद अली खाँ पर शक करते थे।

अतः नाना साहेब और मौलवी अहमद उल्ला शाह के परामर्श पर उन लोगों के निवास स्थानों पर हमला किया और आग लगा दी, जिन पर ब्रिटिश अधिकारियों को सूचना भेजने का संदेश था आज भी शाहजहाँपुर में ' जली कोठी' के नाम से यह ऐतिहासिक स्थान मौजूद है यह कोठी, बनखण्डी नाथ मंदिर व नेत्र चिकित्सालय के सामने मुख्य मार्ग पर स्थित है।

अशफाक को अपने ननिहाल के वाकियात से नफरत थी लेकिन इन्होनें अपने बड़े भाई रियासत उल्ला खाँ से पं0 राम प्रसाद बिस्मिल के बारे में बहुत सारी बाते सुन रखी थी और अंत में राम प्रसाद बिस्मिल के पक्के दोस्त बन गये और राम प्रसाद बिस्मिल से मिलने को ठान ली। फरवरी 1920 में राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खाँ की भेट शाहजहाँपुर में होती है और बिस्मिल की संस्था 'मातृदेवी' में शामिल हो गये। बिस्मिल ने अपनी बहुत सी लिखी हुई पुस्तकें अशफाक को पढ़ने के लिए दीं, साथ में कुछ क्रांतिकारी साहित्य भी दिया। दिसम्बर 1921 को अहमदाबाद कांग्रेस में बिस्मिल अपनी स्वयं सेवक समिति में अशफाक को भी साथ ले गये। वहां अशफाक की भेंट राष्ट्रवादी मुस्लिम नेता मौलाना हसरत मोहानी से हुई अशफाक मोहानी साहब से मिलकर बहुत अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने भी अपना उपनाम ' हसरत' रख लिया। कभी–कभी अपनी लिखी हुई गजलें उनके 'हमदम' अखबार में भी भेज देते थे। मोहानी साहब नें उनकी कई गजलें ' हमदम' रिसालें में छापी।

दिसम्बर 1922 में गया में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ अशफाक भ बिस्मिल के साथ वहां गये। गया अधिवेशन में गांधी जी की बड़ी फजिहत हुई। चौरी चौरा काण्ड के बाद आंदोलन को वापस लेने से गांधी को खूब लताड़ पिलाई। कांग्रेस दो भागों में टूट गई। देशबन्धु चितरंजन दास व मोतीलाल नेहरू ने 1 जनवरी 1923 को ' स्वराज पाट्री' की स्थापना की। 2 वर्ष तक बिस्मिल और अशफाक गाँधी की नीयियों के खिलाफ खूब प्रचार किया।

देश को आजाद कराने के लिए पं0 राम प्रसाद बिस्मिल ने बिना कोई नुकसान किये सरकारी खजाने को लूटकर अस्त्र–शस्त्र खरीदने के लिए डकैती डालने का प्रचार किया। इससे पूर्व भी डकैतियां पड़ चुकी थी। अब उन्होनें पूरी योजना तैयार कर ली। 9 अगस्त 1925 को दस लोगो ने मिलकर काकोरी स्टेशन के आगे ऐट डाउन सहारनपुर पैसेन्जर को रोककर सरकारी खजाना लूट लिया इस कार्य हेतु दस सदस्यों का चयन हुआ था वे थे – 1– पं0 राम प्रसाद बिस्मिल 2– चन्द्रशेखर आजाद 3– राजेन्द्र नाथ

लाहिड़ी 4– मुकुन्दीलाल 5– अशफाक उल्ला खाँ 6– मनमत नाथ गुप्त 7 – वनवारी लाल 8 – शचीन्द्र नाथ बख्शी 9– मुरारी लाल 10– कुन्दन लाल।

चन्द्रशेखर आजाद इस योजना के प्रबल समर्थक थे वे सरकार से सीधी टक्कर लेने में विश्वास रखते थें। अशफाक उल्ला खाँ प्रारम्भ से ही इस प्रकार की डकैतियों के विरूद्व थे। अशफाक की भूमिका इस काण्ड में उल्लेखनीय रही। उन्हीं के प्रयासों से तिजोरी तोड़ी जा सकती थी। वरना खजाना लूट पाना बड़ी टेढ़ी खीर थी।

26 अगस्त 1925 को राम प्रसाद बिस्मिल सहित शाहजहाँपुर के सारे सदस्य गिरफ्तार हो गये। लेकिन अशफाक घर से फरार हो गये। अशफाक पहले नेपाल गये फिर कानपुर जाकर गणेश शंकर विद्यार्थी से मिले। कानपरु से बनारस होते हुए बिहार पहुंचे। बिहार से कानपुर और कानपुर से भोपाल चले गये। भोपाल से राजस्थान चले गयें लेकिन राजस्थान से भागकर पलामू के डाल्टनगंज में कुछ दिन नाम बदलकर नौकरी की। बाद में दिल्ली गये, दिल्ली मे जिस मित्र के यहां ठहरे उसकी लड़की अशफाक पर फिदा हो गई। अशफाक वहां से भागने का विचार बना ही रहे थे कि 8 सितम्बर 1926 को दिल्ली खुफिया पुलिस के उप कप्तान खान बहादुर हाकिम इकरामुल हक ने उन्हें पकड़ लिया अशफाक पर यह आरोप लगाया गया कि अशफाक पासपोर्ट बनाकर रूस भागने की तैयारी कर रहे थे।

इस रोमांचकारी घटना से सबका चकित होना स्वाभाविक था, दि इंडियन टेलीग्रफ (लखनऊ) व दि टिब्यून (लाहौर) ने इस ट्रेन डकैती के संबंध में चौकाने वाले समाचार प्रकाशित किया। इसमें किसी मुसाफिर को लूटने का प्रयास नहीं किया गया था लखनऊ के मुख्य चीफ कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश सर लुईस शर्ट ने अपने फैसले में इस डकैती को भारत की अनोखी डकैती बतलाया।

07 दिसम्बर, 1926 को उन्हें सेंशन सुपुर्द किया गया, मुकदमें के मजिस्ट्रेट ऐनुद् दीन ने अशफाक को व्यक्तिगत रूप से सलाह दी कि वे किसी मुसलमान को अपना वकील नियुक्त करे किन्तु अशफाक ने जिद करके लखनऊ विश्वविद्यालय में कानून विभाग के रीडर व सीनियर एडवोकेट कृपाशंकर हजेला को अपना वकील चुना। उनके मन में हिन्दू मुसलमान जैसा कोई भेदभाव नहीं था। काकोरी ट्रेन डकैती के सिलसिले में लगभग 43 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया लेकिन चन्द्रशेखर आजाद पकड़े नहीं गये। 40 से अधिक गिरफ्तारियों के कारण जनता में सरकार विरोधी भावना तेजी से फैलने लगी।

काकोरी काण्ड के अभियुक्तों में एकमात्र मुसलमान अशफाक उल्ला खाँ थे। अतः मुसलमान अधिकारियों का एकमात्र उद्देश्य यह था कि अशफाक उल्ला खाँ और उनके परिवार के लोगों को यह समझाया जाए कि क्रान्तिकारी आन्दोलन एक हिन्द आन्दोलन है। जिससे मुसलमानों को अलग रहना चाहिये। मजिस्ट्रेट सैय्यद ऐनुद्दीन तथा उप पुलिस अधीक्षक, खान बहादुन तसद्दुक हुसैन चाहते थे कि अशफाक उल्ला खाँ या तो सरकारी गवाह बन जाएं या वह इकबाल–ए– जुर्म कबूल लें। तुम कहाँ इस काफिरों के चक्कर में आ गये? इतना कहना कि अशफाक की त्यौरियां चढ़ गई वह गुस्से में बोले– 'खबरदार! जबान सम्भाल कर बात कीजिये पं0 जी को आपसे ज्यादा जानता हूं उनका मकसद यह बिल्कुल नहीं है और यदि ऐसी ही बात है तो भी अंग्रेजी राज्य से हिन्दु राज्य बेहतर होगा। आपने उन्हें काफिर कहा इसके लिए मैं आपसे यही दरख्वास्त करूंगा कि बजाय मेहरबानी आप अभी यहाँ से तशरीफ लें जाएं वरना मेरे ऊपर दफा 302 का एक केस और ऊपर आ जायेगा। बेचारे तसद्दुक हुसैन अपना

सा मुंह लेकर वहाँ से चुप–चाप खिसक लिए। मैं अकेला ही मुस्लिम हूँ, पठान हूँ, मैने कुछ गड़बड़ी की तो कुल मुस्लिम व पठान कौम पर धब्बा लग जायेगा। मुझे बाइज्जत कर मिटने दो।'

काकोरी की घटना लखनऊ जिले में हुई थी। अतः मुकदमा लखनऊ में स्पेशल मजिस्ट्रेट ऐनुद्दीन की अदालत में 4 जनवरी 1926 को प्रारम्भ हुआ उस समय ब्रिटिश सरकार यह समझती थी कि क्रांतिकारी आन्दोलन मुख्यतः हिन्दु आन्दोलन है इसलिए मुसलमान अधिकारियों पर विश्वास करती थी। इसीलिए ब्रिटिश सरकार ने केवल सैय्यद ऐनुद्दीन को स्पेशल मजिस्ट्रेट चुना बल्कि क्रातिकारियों के पकड़ने के लिए अधिकतर मुसलमान अधिकारियों को नियुक्त किया। अशफाक उल्ला खाँ को पकड़ने के लिए सब इंसपेक्टर सी0आई0डी0 मुंशी फशाहत हुसैन को नियुक्त किया गया। खैरात नवी को प्राजिक्यूटिंग इन्सपेक्टर बनाया गया।

स्पेशल मजिस्ट्रेट ऐनद्दी की तहसीलदार से मजिस्ट्रेट पद पर प्रोन्नति की गई स्पेशल मजिस्ट्रेट ऐनुद्दीन पीछे से छूरा घोंपने में निपुण थे। वे क्रातिकारियों के शत्रु थे। मुकदमा चलाने के लिए एक सिनेमाहाल(रिंक थियेटर) किराये पर लिया गया सरकार की ओर से क्रातिकारियों के लिए हरकनाथ मिश्र वकील नियुक्त हुए जबकि सरकार के पक्ष में जगत नारायनद मुल्ला जो पं0 जवाहरलाल नेहरू के साले थे। सरकारी वकील नियुक्त किये गये। उन्होंने एक साल तक रू0 500 प्रतिदिन के हिसाब से गर्वनमेन्ट के जेब से निकाले। कुछ भी हो पर जगत नारायण मुल्ला ने तो सरकार बहादुर से एक लाख रूपया से अधिक भुजवाया।

स्पेशल मजिस्ट्रेट ऐनद्दीन ने मुकदमें को सेशन सुपुर्द करने के आदेश तैयार करने में अधिक समय लगाया। प्रत्येक क्रातिकारी की तस्वीर अत्यधिक खराब करने में उन्होंने कोई कसर नही उठाई। न्यायाधीश हेमिल्टन भारत वासियों से धृणा करते थे और न्याय का गला घोटने के लिए प्रसिद्व थे। जेल से अदालत तक का मार्ग लगभग 3 मील का था तथा इस पूरी यात्रा में क्रांतिकारी झूम–झूमकर ऊँचे स्वर में राष्ट्रीय गीत गाते थे। मार्च 1927 में मुकदमा अंतिम चरण में पहुंचा। 6 अप्रैल 1927 को सेशन जज हेमिल्टन ने अपना निर्णय सुनाया, सम्पूर्ण निर्णय 115 पृष्ठों में था। क्रातिकारियों को इण्डियन पेनेल कोड की धारा 121 (अ) 120 (ब) तथा 396 के अंतर्गत सजाएं दी गई।

न्यायाधीश हेमिल्टन क्रातिकारियों से इतना घबरा गये कि निर्णय देने के पूर्व उन्होंने लखनऊ छोडने की व्यवस्था कर ली थी। वे तत्कला बम्बई चले गये, वहां से जलपोत द्वारा लन्दन चले गये। क्रातिकारियों में अशफाक उल्ला खाँ और शचीन्द्र नाथ बख्शी पर अलग से मुकदमा चलाया गया। स्पेशल सेशन जज जे0आर0 डब्लू बैनेट ने 13 जुलाई 1927 को पूरक मुकदमें का फैसला सुनाया दो धाराओं में उम्र कैद व एक में सजाए मौत(फाँसी) किन्तु फैसले में अन्य जजों की भांति बैनेट ने भी यह बात लिखी थी कि 'अगर ये लोग पश्चाताप करें तो सजा कम की जा सकती है''।

वकील की सलाह पर लखनऊ जेल से अशफाक उल्ला खाँ ने एक अन्डर टेकिंग लिखकर गवर्नर को भेजी। लखनऊ जेल में ही अशफाक बिस्मिल से उनकी बैरक में जाकर अकेले मिले, दोनों दोस्तों में काफी विचार–विमर्श हुआ। बिस्मिल ने अशफाक को सलाह दी ''किसी प्रकार माफी मांग कर भी अगर हम लोग बच जाये तो फिर आगे देखना हम क्या करते है? यार– अभी माफी मांगने में क्या जाता है? अशफाक की जहन में बिस्मिल का यह शेर कौध गया–

''हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है?''

उन्होनें बिस्मिल की बात मान ली और माफीनामा भेजने पर गौर करने का आश्वासन दिया और अपनी बैरक में चले गये।

फैजाबाद की काल कोठरी से 11 अगस्त 1927 को अशफाक ने अपना माफीनामा लिखकर भेजा और यह दरख्वास्त की गयी थी कि उनके ननिहाल के लोगों ने 1857 में ब्रिटिश साम्राज्य की हिफाजत के लिए अपने प्राण तक गवा दिये है। 1920–21 में असहयोग आंदोलन में सरकार का साथ दिया है, इसके मद्देनजर सजा–ए–मौत में कमी की जाए। तत्पश्चात घरवालों की सलाह पर एक दूसरा माफीनामा 29 अगस्त 1927 को भेजा जिसमें यह कहा गया कि उनकी बूढ़ी माँ को अपने सबसे छोटे बेटे का गम बर्दाश्त नही होगा और वह दम तोड़ देगी लेकिन किसी ने यह सलाह दी कि यह माफीनामा तो अशफाक की बजाय उनकी माँ की ओर से भेजा जाना चाहिए। 3 सितम्बर 1927 को शाहजहाँपुर की मां मजहुरूनिन्सां बेगम ने वायसराय और गवर्नर जनरल को 'मर्सीपटीशन की अर्जी भेजी' किन्तु उस पर भी कोई विचार नहीं हुआ। इस प्रकार विधानसभा सदस्यों–ठाकुर मनजीत सिंह, ह्रदय नाथ कुंजरू, रफी अहमद किदवई, मोहम्मद याकूब अली, मुख्तार सिंह, ईश्वर शरण व मोहम्मद इस्माइल खाँ ने संयुक्त रूप से हस्ताक्षर करके संयुक्त प्रान्त के गवर्नर विलियम एस0 मोरिस को एक प्रार्थना पत्र नैनीताल भेजा। इसी प्रकार का एक प्रार्थना पत्र गोविन्द बल्लभ पन्त व सी0वाई0 चिन्तामणि ने भी भेजा किन्तु सब व्यर्थ गया।

22 सितम्बर, 1927 को होम सेकेट्री एस0डब्लू0 हेग ने अपनी रिपोर्ट दी इसमें यह कहा गया था कि राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्त में जुलाई 1924 में सरकार उलटने का षड्यंत्र शाहजहाँपर मे रचा गया जिसमें अशफाक भी शामिल था। बिस्मिल अशफाक के पक्के दोस्त थे यद्यपि षड्यंत्र में अशफाक का प्रत्यक्ष हांथ नहीं था क्योंकि वह केन्द्रीय कार्यकारिणी का सदस्य नहीं था ''फिर भी मौतें तो हुई जिनका जिम्मेदार वह है।'' अतः मामले में फांसी ही दी जा सकती है। आखिरकार 19 दिसम्बर 1927 को फाँसी देना तय हुआ। अशफाक उल्ला खॉ बसन्ती रंग के बस्त्र पहनकर बहुत उल्लास से न्यायालय में प्रवेश हुए। अशफाक उल्ला खाँ को और सजाओं के अतिरिक्त फाँसी की सजा दो घटनाओं (काकोरी केस, बिचपुरी डकैती) में अलग–अगल मिली अशफाक उल्ला खाँ को फैजाबाद जेल में फाँसी की सजा दी गयी। फाँसी से पूर्व अशफाक उल्ला खाँ ने अपने भाई अपनी माँ व बहन नलिनी देवी (शचीन्द्रनाथ बक्शी की बड़ी बहन) को खत लिखे थे। काल कोठरी में रहते हुए अशफाक अपनी आत्मकथा भी लिखते रहे जो पूरी न कर सके।

फाँसी वाले दिन सोमवार 19 दिसम्बर 1927 को अशफाक हमेशा की तरह सुबह उठे, शौच आदि से निबृत्त हो स्नान किया। कुछ देर बज्र आशन में बैठ कुरान की आयतों को पढ़ा और किताब बन्द करके उसे आंखों से चूंमा फिर अपने आप जाकर फाँसी के तख्ते के पास गये और तख्ते को चुम्मन दिया और उपस्थित जनता से कहा 'मेरे ये हांथ इंसानी खून से कभी नहीं रंगे, मेरे ऊपर जो इल्जाम लगाया गया वह गलत है खुदा के यहाँ मेरा इन्साफ होगा।'' फिर अपने आप ही फन्दा गले में डाल लिया और खुदा का नाम लेते हुए वह दुनिया से कूच कर गये। उन्होंने मरने से पहले एक शेर पढ़ा था।–

तंग आकर हम भी उनके जुल्म के बेदाग से।
चल दिये सु ए अदम जिन्दाने फैजाबाद से।।

अशफाक की लाश फैजाबाद से शाहजहाँपुर लायी जा रही थी । लखनऊ स्टेशन पर गाड़ी बदलनी थी कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थी ने बीमारी के बावजूद स्टेशन पर आकर उनके मृत शरीर पर श्रद्धा सुमन अर्पित किये। अशफाक के मृत शरीर को उनके पुश्तैनी मकान के सामने वाले

बगीचे मे ंदफना दिया गया। ''युग के देवता'' पुस्तक में उनकी अन्तिम दर्शन, उनकी मजार तथा दुर्लभ डायरी के कुछ पन्ने उनके ही हस्तलिपि मे देखे जा सकते है।

अशफाक और बिस्मिल ही सही मायनों में स्वतंत्र भारत में पूजे जाने लायक पैगम्बर या देवदूत थे। जिन्होंने देश में साम्प्रदायिक एकता की बहाली और आजादी के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी। अशफाक राम प्रसाद बिस्मिल को 'राम भाई' कहकर पुकारते थे और बिस्मिल अशफक को कृष्ण कहते थे। अशफाक के कहने पर राम प्रसाद बिस्मिल ने एक शेर कहा–

'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।

देखना है जोर कितना बाजु–ए अब हमारे कातिल में हैं,

वक्त आने दे बता देंगे तुझे–ए–आसमाँ।

हम अभी से क्या बताये क्या हमारे दिल में है।।''

यह शेर सुनते ही अशफाक उछल पड़े और उन्होंने बिस्मिल को गले से लगा लिया और बोले 'राम भई– आप तो उस्तादों के भी उस्ताद है।' उनका लक्ष्य एक था, देश भक्ति का जज्बा पैदा करना और गुलामी से निजात पाना।

अन्य देशों में भागने के पश्चात क्रांतिकारियों के महान कार्यो की चर्चा करते हुए 'बिस्मिल' ने स्वीकार किया, 'गाजी मुस्तफा कमालपाशा जिस तरह तुर्की से भागे थे उस समय केवल इक्कीस युवक आपके साथ थे। कोई साजो–समान न था। मौत का वारन्ट पीछे–पीछे घूम रहा था पर समय ने ऐसा पलटा दिखाया कि उसी कमाल ने अपने कमाल से संसार को आश्चर्यचकित कर दिया। वही कातिल कमालपाशा टर्की का भाग्य निर्माता बना। महामना लेनिन को एक दिन शराब की पीपों में छिपकर भागना पड़ा था, नही ंतो मृत्यु में कुछ देर न थी। वहीं महात्मां लेनिन रूस के भाग्य विधाता बने। शिवाजी डाकू और लूटेरे समझे जाते थे।, पर समय आया जबकि हिन्दु जाति ने उन्हें अपना सिरमौर बनाया, गौ ब्राम्हण–रक्षक छत्रपति शिवाजी बना दियां। क्लाइव एक उद्दण्ड विद्यार्थी था, जो अपने जीवन से निराश हो चुका था। समय के फेर ने उस उद्दण्ड विद्यार्थी को अंग्रेज जाति का राज्य स्थापनाकर्ता लार्ड क्लाईव बना दिया। सुनयात सेन चीन के अराजकतावादी पलातक (भागे हुए) थे। समय ने ही दो उसकी पलातक को चीनी प्रजातंत्र का सभापति बना दिया। सफलता ही मनुष्य के भाग्य का निर्माण करती है । असफल होने पर उसी को बर्बर, डाकू, अराजक, राजद्रोही तथा हत्यारे के नामों से विभूषित किया जाता हैं। सफलता उन्हीं सब कामों को बदलकर दयालू, प्रजापालक न्यायकारी प्रजातंत्रवादी तथा महात्मा बना देती हैं'

जब देश साम्प्रदायिक दंगों की आग से झुलश रहा था, आर्य समाज का 'शुद्दी आंदोलन' तथा मुलसमानों का ' तब लीग' आंदोलन साम्प्रदायिक विष घोल रहा था तथा ब्रिटिश प्रशासन की 'फूट डालों और राज करो' नीति हिन्दु मुसलमान के बीच खाई को और चौड़ कर रही थी, उस समय अशफाक उल्ला खाँ ने हिन्दु मुसलमान को एक साथ मिलकार आजादी की लडाई लड़ने को सलाह दी। उन्होंने कहा मेरे भारतवासी भाइयों! आप कोई हो, चाहें जिस धर्म या सम्प्रदाय के अनुयायी हो, परन्तु आप देश–हित के कामों में एक होकर योगदान कीजिये। आप लोग व्यर्थ लड़ झगड़ रहे है। सब धर्म एक है। रास्ते चाहें भिन्न–भिन्न हों परन्तु लक्ष्य सबका एक ही है फिर यह झगड़ा क्यों? हम मरने वाले काकोरी के अभियुक्तों के लिए आप लोग एक हो जाइए और सब मिलकर नौकरशाही का मुकाबला कीजिये यह सोंचकर सात करोड़ मुसलमानों में मैं सबसे पहला मुसलमान हूँ जो भारत की स्वतंत्रता के लिए फाँसी पर चढ़ रहा हूं, मन ही मन अभियान का अनुभव कर रहा हूँ। किन्तु मैं यह विश्वास

दिलाना चाहता हूं कि मैं हत्यारा नहीं था, जैसा कि मुझे अदालत में साबित किया गया।

जजों ने हमें निर्दयी, बर्बर, मानव–कलंक आदि विशेषणों से याद किया है, किन्तु हम यह पूछते है कि क्या इन जजों ने जलियाँवाला बाग में डायर को गोली चलाते देखा या सुना नहीं? क्या उसने निशस्त्र भारतीयों–स्त्री–पुरूष, बाल–बृद्व सब पर गोलियां चलायी? कितने जजों ने उसे इन विशेषणों से विभूषित किया? फिर क्या यह मजाक हमारे लिए ही उड़ाने को है?

अब मैं विदा होता हूँ। ईश्वर आप सब का भला करे। मेरे परिवार में आजतक देश सेवा के लिए कोई त्याग न हुआ था। अब यह कलंक टूट जायेगा। अंत में अपने साथी अभियुक्तों तथा मुखविरों और इकवाली मुल्जिमों से भी बंदे करता हूँ।

''सब को आखिरी सलाम! भारतवर्ष सुखी हो। मेरे भाई आनन्द लाभ करें।'' इस प्रकार यह भारत का माँ का महान सपूत अपने देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते हुए, भारतवासियों को स्वतंत्रता संघर्ष में सममिलित होने की प्रेरणा देते हुए, सांम्प्रदायिक एकता व देश की अखंडता के लिए जागरूक करते हुए, आजादी का स्वप्न सजाए हुए इस दुनिया से चला गया। किन्तु अपने पीछे राष्ट्र समर्पण, बलिदान, त्याग की अभूतपूर्व मिसाल प्रेरणा स्वरूप छोड़ गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 एन0सी0 मेहरोत्रा एवं डा0 मनीषा टण्डन, स्वतंत्रता आंदोलन में शाहजहाँपरु का योगदान। (इलाहाबाद दिसम्बर 1995)
2. सुधीर विद्यार्थी, शहीद अशफाक उल्ला खाँ और उनका युग (शाहजहाँपर 1988)
3. बनारसी दास चतुर्वेदी, अमर शहीद अशफाक उल्ला खाँ (आगरा 1970)
4. मन्मथनाथ गुप्ता, भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास।
5. बनारसी दास चतुर्वेदी, काकोरी के शहीद।
6. गुप्त मन्मथनाथ, क्रांतिकारी आंदोलन का वैचारिक इतिहास (दिल्ली 1980)
7. मदन लाल वर्मा 'कान्त' स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी साहित्य का इतिहास (प्रवीण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006)
8. डा0 एन0सी0 मेहरोत्रा, शाहजहाँपुर ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर।
9. वोहरा भगवती चरणः बम का दर्शन।
10. दि रिवोलयूशनरी पैप्पलेट
11. श्री व्यथित हृदय, स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी सेनानी भाग–1।
12. अमर शहीद चंन्द्रशेखर आजाद क्रांतिकारी–श्री विश्वनाथ वैशम्पायन।
13. आशारानी वोहरा –स्वाधीनता सेनानी।
14. विद्यार्णव शर्मा –युग के देवता–बिस्मिल और अशफाक।